कक्षा - 10+2 (हिंदी)

तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता

छंद

डॉ.सुनील बहल

छंद शब्द का व्युत्पत्ति अर्थ है– 'छन्दासि छादनात्' अर्थात कविता का छादन है। 'छंद' धातु क अर्थ हैं– प्रसन्न करना, आच्छादन करना, आह्लादित करना, बाँधना। इन अर्थों के आधार पर 'छंद' शब्द का अर्थ 'प्रसन्न करने वाली वस्तु, आच्छादन, बंधन' आदि किया जाता है।

जब किसी रचना में वर्णों या मात्राओं की संख्या गति (प्रवाह), यति (विराम), तुक आदि का नियम माना जाता है, तो वह रचना 'छंद' कहलाती है। छंदमय कविता में संगीत का समावेश स्वतः ही हो जाता है और वह सरलता से हृदय–ग्राही बन जाती है। अतः छंदोबद्ध रचना का नाम ही कविता है।

जिस शास्त्र में छंदों के स्वरूप पर विचार किया जाता है, वह 'छंद–शास्त्र' कहलाता है। छंद शास्त्र के निर्माता आचार्य पिंगल हैं। इसलिए छंद शास्त्र को पिंगल शास्त्र भी कहते हैं।

कुछ समय पूर्व तक छंद को कविता का अनिवार्य अंग माना जाता था किन्तु आजकल छंदों के बिना भी कविता की रचना होती है। सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ कवि कॉलरिज के अनुसार, "अत्युत्तम कविता भी छंदों के बिना हो सकती है।" आज कविता छंदों के बंधन से चाहे मुक्त हो गयी है परन्तु उसमें तुक लय, गति की व्यवस्था तो बनी ही रहती है। पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी पुस्तक–11 तथा–12 में दोनों तरह की अर्थात छंदोबद्ध और छंद मुक्त कविताए हैं।

छंद परिचय के लिए आवश्यक ज्ञान

(1) चरण– प्रत्येक छंद के कई भाग होते हैं। उनमें से प्रत्येक भाग को 'चरण' कहते हैं। अधिकांश छंदों के चार–चरण होते हैं। किंतु कुछ छंदों के छः चरण भी होते हैं।

(2) गति– किसी भी छंद का पाठ करने में जो एक प्रकार का विशेष प्रवाह होता है, वह 'गति' अथवा 'लय' कहलाता है। यदि छंदों में वर्णों अथवा मात्राओं की संख्या ठीक नहीं होगी तो गति में अवरोध उत्पन्न हो जाता है।

(3) यति–किसी छंद को पढ़ते वक्त जहाँ रुकते हैं, उस विराम को 'यति' कहते हैं।

(4) तुक–छंद के चरणों के अंत में समान अक्षरों का प्रयोग 'तुक' कहलाता है।

(5) मात्रा– वर्णों के उच्चारण में लगने वाला समय 'मात्रा' कहलाता है। मात्रा केवल स्वरों की ही गिनी जाती है, व्यंजनों की नहीं।

(6) लघु तथा गुरु– ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ, ऋ) तथा उससे युक्त व्यंजन लघु कहलाते हैं। इनकी एक मात्रा होती है। दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ) तथा उससे युक्त व्यंजन गुरु कहलाते हैं। इनकी दो मात्राएँ होती हैं। इस आधार पर 'मन' में दो मात्राएँ, 'मान' में तीन मात्राएँ तथा 'माना' में चार मात्राएँ हैं। लघु मात्रा का चिह्न '।' है तथा गुरु मात्रा का चिह्न (ऽ)

(7) संयुक्त अक्षर– जब दो व्यंजन संयुक्त होते हैं, तो संयुक्त अक्षर से पूर्व लघु मात्रा भी गुरु मानी जाती है। जैसे– मस्त, गण्य, कल्प में क्रमशः 'म' 'ग' और 'क' वर्ण गुरु माने जाएँगे और इनकी मात्राएँ दा गिनी जाएंगी। संयुक्त अक्षर के शुरू में यदि कोई आधा वर्ण है तो उसकी मात्रा नहीं गिनी जाती। जैसे– 'व्यवहार' शब्द में 'व्य' की एक ही मात्रा गिनी जाएगी। यदि संयुक्त वर्ण से पहले ह्रस्व स्वर पर जोर न पड़े तो वह भी लघु माना जाता है।

(8) अनुस्वार– जिन वर्णों पर अनुस्वार (.) का चिह्न होता है, वे भी गुरु माने जाएँगे। जैसे– दंड, रंग, भंग, जंग, गंगा आदि शब्दों में क्रमशः 'द', 'र', 'भ', 'ज' और 'ग' वर्ण गुरु माने जाएँगे।

(9) हलन्त– प्राचीन विद्वानों द्वारा हलंत के पूर्व प्रयुक्त हुआ लघु वर्ण भी गुरु माना जाता था। किंतु हिंदी में अब हलंतयुक्त वर्ण को लघु ही माना जाता है जैसे –'राजन्' शब्द में तीन मात्राएँ ही गिनी जाएँगी क्योंकि स्पष्ट है कि 'न्' में स्वर ही नहीं है अतः 'न्' की मात्रा नहीं गिनी जाएगी।

(10) विसर्ग– जिन वर्णों के बाद विसर्ग (:) प्रयुक्त होता है, वे गुरु माने जाते हैं। जैसे– प्रातः, दुःख आदि शब्दों में क्रमशः 'त' और 'दु' वर्ण गुरु माने जाएँगे और इनकी दो मात्राएँ गिनी जाएँगी।

(11) अनुनासिक– जिन लघु वर्णों पर चन्द्रबिंदु (ँ) होता है, वे लघु ही माने जाते हैं। जैसे– 'हँस' शब्द में 'ह' वर्ण लघु माना जाएगा और उसकी एक मात्रा गिनी जाएगी। किंतु यदि दीर्घ वर्णों पर चन्द्रबिंदु (ँ) होगा तो वे गुरु ही माने जाएँगे।

(12) कई बार प्रयोजन वश लघु को गुरु तथा गुरु को लघु मान लिया जाता है। जैसे– 'ओ' गुरु माना जाता है। इस आधार पर – 'को' 'जो' आदि को गुरु माना जाएगा किन्तु कई बार 'ओ' का उच्चारण 'उ' रूप में किया जाता है, जैसे 'जो' का उच्चारण 'जु' तथा 'को' का उच्चारण 'कु' किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में 'को' की गणना लघु के अन्तर्गत की जाएगी। इसी प्रकार 'ए' गुरु स्वर है किन्तु छंद पूर्ति के लिए आवश्यकतानुसार कभी–कभी इसे लघु भी मान लिया जाता है।

छंदों के भेद

मात्रा और वर्णक्रम के आधार पर छंदों के दो मुख्य भेद हैं– (1) मात्रिक छंद (2) वर्णिक छंद।

(1) मात्रिक छंद– जिन छंदों की रचना मात्राओं की संख्या के अनुसार होती है, उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं। इस छंद में मात्राओं को गिन कर रखा जाता है।

(2) वर्णिक छंद– जिन छंदों की रचना वर्णों की संख्या के अनुसार होती है, उन्हें वर्णिक छंद कहते हैं। इसमें मात्राओं की गिनती न करके वर्णों के लघु–गुरु क्रम को देखा जाता है।

छंदों के उपभेद– उपर्युक्त छंदो के तीन उपभेद हैं–

(i) समछंद– जिन छंदों के चारों चरणों की मात्रा या वर्ण समान होते हैं, उन्हें समछंद कहते हैं।

(ii) अर्धसम छंद– जिन छंदों में पहले–तीसरे तथा दूसरे– चौथे चरणों में मात्रा या वर्ण संख्या समान हो, उन्हें 'अर्धसम छंद' कहते हैं।

(iii) विषम छंद– जिन छंदों के चरणों में मात्राओं और वर्णों की संख्या विषम हो अर्थात् छंदों का प्रत्येक चरण भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है, उन्हें विषम छंद कहते हैं।

गण– तीन लघु या गुरु वर्णों के समूह को गण कहते हैं। वर्णिक गण संख्या में आठ हैं। इन वर्णों को समझने के लिए एक सूत्र है– यमाताराजभानसलगम्। इस सूत्र को कंठस्थ कर लेने से गणों के नाम तथा उनमें लघु व गुरु वर्ण के क्रम को आसानी से समझा जा सकता है। उनके नाम, लक्षण, स्वरूप व उदाहरण इस तरह हैं–

	गण	लक्षण	स्वरूप	उदाहरण
1.	यगण	आदि लघु	। ऽ ऽ	कमाना
2.	मगण	सर्व गुरु	ऽ ऽ ऽ	मामाजी
3.	तगण	अंत लघु	ऽ ऽ ।	सामान
4.	रगण	मध्य लघु	ऽ । ऽ	शारदा
5.	जगण	मध्य गुरु	। ऽ ।	सुजान
6.	भगण	आदि गुरु	ऽ । ।	गायन
7.	नगण	सर्व लघु	। । ।	नरम
8.	सगण	अंत गुरु	। । ऽ	रसना

विशेष– वर्णिक गणों के समान मात्रिक गण भी होते हैं किन्तु वे प्रयोग में नहीं आते।

कुछ छंदों का परिचय– नीचे कुछ मुख्य मात्रिक व वर्णिक छंदों का परिचय दिया जा रहा है–

दोहा

लक्षण:- इस छंद के पहले और तीसरे चरण में 13-13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अंत में गुरु और लघु आने ज़रूरी हैं ।

उदाहरण:-

S S S I I I I I S (13)   I S I I I S S I (11)

माला फेरत युग गया,   फिरा न मन का फेर ।

I I S I I S S I S (13) I I S I I S S I (11)

कर का मनका डारि के ,   मन का मनका फेर।।

स्पष्टीकरण :- यहाँ पहले और तीसरे चरण में 13-13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ हैं । प्रत्येक सम चरण के अंत में गुरु और लघु हैं, अत: यहाँ दोहा छंद है ।

सोरठा

लक्षण:- यह दोहा का उलटा होता है। इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं ।

उदाहरण:-

I S I II S SI (11) SS SII II IS
फिरा न मन का फेर, माला फेरत युग गया ।
I I S I I S SI (11) I I S II S SI S
मन का मनका फेर, कर का मनका डारि के ।।

स्पष्टीकरण :- यहाँ पहले और तीसरे चरण में 11-11 तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ हैं, अत: यहाँ सोरठा छंद है ।

डॉ.सुनील बहल

चौपाई

लक्षण:- इस छंद में चार चरण होते हैं। हरेक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। पहले- दूसरे तथा तीसरे -चौथे चरणों के अंतिम शब्दों की तुक मिलती होती है। अंत में दो गुरु होने से लय और भी सुंदर हो जाती है ।अंत में जगण तथा तगण नहीं होते ।

उदाहरण :-

SI SI SS SSS (16) **IIII ISIS II SS (16)**
राम राज्य बैठे त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका ।
III I II SS II SS (16) **SI ISI IIIS SS (16)**
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।

स्पष्टीकरण :- यहाँ हरेक चरण में 16-16 मात्राएँ हैं। पहले- दूसरे तथा तीसरे -चौथे चरणों के अंतिम शब्दों की तुक मिल रही है तथा अंत में दो गुरु होने से लय और भी सुंदर हो रही है ,अत: यहाँ चौपाई छंद है।

सवैया

लक्षण :- सवैया छंद के कई भेद हैं। एक भेद मतगयंद इस प्रकार है :-

मतगयंद (सवैया) के हर चरण में सात भगण (SII) और दो गुरु(SS) के क्रम से 23 अक्षर होते हैं।

उदाहरण :-

SI I SI I SI I SI I SI I SI I SI I S S

काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है।

SI I SI ISI IS II SI ISI ISI IS S

देह बिहीन सनेह सभो तन, नेह बिरक्त अगेह अछै है ।

स्पष्टीकरण :- अत: यहाँ हर चरण में सात भगण (SII) और दो गुरु(SS) के क्रम से 23 अक्षर होने से मतगयंद (सवैया) छंद है

कवित्त

लक्षण:- कवित्त छंद के हर चरण में कुल 31 अक्षर होते हैं। 16,15 अक्षरों पर यति होती है और अंत में गुरु होता है :-

उदाहरण :-

1 2 3 4 5 6 7 8 910 1112 13141516

जोगी जती ब्रह्मचारी बड़े- बड़े छत्रधारी,

1 2 3 4 5 6 7 8 910 11 121314 15

छत्र ही की छाया कई कोस लौ चलत हैं ।

स्पष्टीकरण :-यहाँ 16,15 अक्षरों पर यति है और अंत में गुरु है,अत: यहाँ कवित्त छंद है।

इन्हीं छंदों को विस्तारपूर्वक समझने के लिए पढ़िए -

(क) मुख्य मात्रिक छंद

(1) दोहा

लक्षण – इस मात्रिक छंद के पहले और तीसरे चरण में 13, 13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11, 11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अंत में गुरु लघु आने ज़रूरी हैं। जैसे –

ऽऽ ।। ऽऽ ।ऽ(13) ऽऽ ऽ।। ऽ।(11)

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

ऽ ।। ऽ ऽऽ ।ऽ(13) ऽ। ।।। ।। ऽ ।(11)

जा तन की झाई परैं, स्याम हरित – दुति होइ।

स्पष्टीकरण : यहाँ पहले – तीसरे चरणों में 13,13 मात्राएँ हैं, दूसरे – चौथे चरणों में 11,11 मात्राएँ हैं। कुल दोनों चरणों में 24, 24 मात्राएँ हैं। प्रत्येक सम चरण के अंत में गुरु और लघु हैं। अत: यहाँ पर दोहा छंद है।

अन्य उदाहरण

(i) कीजै चित सोई तरौं, जिहि पतितनु के साथ।
मेरे गुन – औगुन – गननु गनौ न गोपीनाथ।

(ii) बड़े न हूजै गुनन बिन विरद बड़ाइ पाय।
कहत धतूरे सौ कनक, गहनो गढ़यो न जाय।

(iii) स्वारथ सुकृत न श्रमु वृथा, देखि विहंग विचारि।
बाज पराए पानि पर, तूँ पच्छीन न मारि।

(2) चौपाई

यह एक सममात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। हरेक चरण के अन्तर्गत 16-16 मात्राएँ होती हैं। पहले-दूसरे तथा तीसरे-चौथे चरणों के अंतिम शब्दों की तुक मिलती होती है। अंत में दो गुरु होने से लय और भी सुंदर हो जाती है। अंत में जगण तथा तगण नहीं होते। जैसे-

ऽ। ऽ। ऽऽ ऽऽऽ(16) ।।।। ।ऽ।ऽ ।।ऽ ऽ(16)

राम राज्य बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका।

।।। । ।।ऽऽ ।। ऽऽ(16) ऽ। ।ऽ। ।। ।ऽ ऽऽ(16)

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।

16×4 = 64 मात्राएँ

स्पष्टीकरण : यहाँ चारों चरणों में 16-16 मात्राएँ हैं, तुक भी मिलती है, अंत में दो गुरु भी हैं, अत: यहाँ चौपाई छंद है।

अन्य उदाहरण –

औ मन जानि कबित अस कीन्हा। मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा।।
कहँ सो रतनसेनि अस राजा। कहाँ सुवा असि बुधि उपराजा।

(ख) मुख्य वर्णिक छंद

(1) सवैया

यह वर्णिक छंद है। 22 से लेकर 26 वर्णो के समवर्णिक छंदों को सवैया कहते हैं। इसके छ: भेद हैं।
(1) मदिरा (2) मत्तगयन्द (3) किरीट (4) दुर्मिल (5) सुन्दरी (6) कुन्दलता।

इनमें मत्तगयन्द प्रसिद्ध सवैया है। इसका लक्षण तथा उदाहरण इस प्रकार है-

मत्तगयन्द – इस सवैया छंद के प्रत्येक चरण मे सात भगण(ऽ।।) और दो गुरु (ऽऽ) के क्रम से 23 वर्ण होते हैं।

उदाहरण –

ऽ। । ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।। ।ऽ। । ऽऽ

काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है।

ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ ।।ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽऽ

देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरक्त अगेह अछै है।

ऽ । । ऽ।।ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ।।ऽ। । ऽऽ

जान को देत अजान को देत, जमीन को देत जमान को दैहै।

ऽ । । ऽ। ।ऽ ।।ऽ ।। ऽ।। ऽ।।ऽ ।। ऽऽ

काहे को डोलत है तुमरी सुधि सुन्दर स्री पदमा पति लैहै।

स्पष्टीकरण : यहाँ प्रत्येक चरण में सात भगण (ऽ।।) और दो गुरु (ऽऽ) हैं, अत: यहाँ सवैया (मत्तगयंद) छंद है।

(2) कवित्त (धनाक्षरी)

इस मुक्तक वर्णिक छंद के प्रत्येक चरण में किसी भी प्रकार के 31 वर्ण होते हैं। 16 तथा 15 वर्णो पर यति होती है। अंत में गुरु वर्ण रहता है। जैसे-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

जोगी जती ब्रह्मचारी बडे बडे छत्रधारी,

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

छत्र ही की छाया कई कोस लौ चलत हैं।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

बडे-बडे राजन के दाबत फिरत देस,

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

बडे-बडे राजनि के दर्प को दलत हैं।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

मान से महीप औ दिलीप के से छत्रधारी,

१ २   ३ ४ ५ ६   ७ ८   ९१० ११ १२१३१४ १५
बडो अभिमान भुज दंड को करत हैं।
१ २ ३   ४ ५ ६ ७ ८ ९१०११ १२ १३१४१५१६
दारा से दिलीसर, दर्जोधन से मानधारी,
१ २   ३ ४   ५ ६ ७ ८ ९१० ११ १२१३१४१५
भोग – भोग भूम अन्त भूम मै मिलत हैं।

स्पष्टीकरण : यहाँ प्रत्येक चरण में 31 वर्ण हैं। 16 तथा 15 वर्णों पर यति है और अंत में गुरु वर्ण है, अत: यह कवित्त छंद है।

(3) सोरठा

यह एक अद्र्धसम मात्रिक छंद है। इसके पहले और तीसरे चरणों में ग्यारह-ग्यारह तथा दूसरे तथा चौथे चरणों में तेरह-तेरह मात्राएँ होती हैं। यह दोहे का बिल्कुल उलट होता है।

उदाहरण :

अंक दस गुनो होत, कहत सबै बेंदी दिए।
अगनित बठतु उदोत, तिय ललार बंदी दिए॥

स्पष्टीकरण : यहाँ पहले और तीसरे चरण में 11, 11 मात्राएँ हैं तथा दूसरे और चौथे चरण में 13, 13, मात्राएँ हैं। कुल दोनों चरणों में 24, 24 मात्राएँ हैं।

अत: यहाँ सोरठा छंद है।

==

तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता
डॉ.सुनील बहल
एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)
स्टेट रिसोर्स पर्सन
(हिंदी और पंजाबी)

==